International Journal in Management and Social Science
Volume 10 Issue 06, June 2022 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

भारतीय विदेश नीति में व्यक्तित्व का प्रभाव : एक अध्ययन

वंशगोपाल'

असि० प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,

गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट

सारांश - भारतीय विदेश नीति के निर्धारण एवं संचालन में निर्णयकर्ता, राष्ट्र नेताओं (प्रधानमंत्री) के मूल्य, मान्यताएं, योग्यताएं एवं व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव देखा गया है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र जहां विदेश नीति से सम्बंधित नीति निर्धारक संस्थाएं अपने विकसित रूप में नहीं हैं यहाँ विदेश नीति के निर्धारण में राष्ट्र नेताओं के मूल्य, मान्यताएं, योग्यताएं एवं व्यक्तित्व का वि"ोष प्रभाव दृष्टिगत होता है। क्योंकि अधिका"ा जनसंख्या विदे"ा नीति से सम्बन्धित मामलों को सारपूर्ण रूप से समझने की क्षमता नहीं रखती जिससे विदे"ा नीति से सम्बन्धित मामलें प्रधानमंत्री तथा उसके अधिनस्थों तक सीमित हो जाते हैं। अतः जनसामान्य यहाँ सत्ता के शीर्ष पर बैठे हुये नेताओं को लगभग पूजने सी लगती है। इसीकारण भारतीय विदे"ा नीति के निर्धारण एवं संचालन में इन राष्ट्रनेताओं (प्रधानमंत्रियों) का व्यक्तित्व तथा उससे प्रभावित नीतियाँ निर्णायक भूमिका निभाती हैं।इसी परिप्रेक्ष्य में भारतीय विदे"ा नीति पर पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. मनमोहन सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी आदि के मूल्य, मान्यतायें, योग्यताएँ एवं व्यक्तित्व का वि"ोष प्रभाव दृष्टिगत होता है।

शब्दकुंजी- भारतीय विदेश नीति, व्यक्तित्व, राष्ट्रीय हित, अंतरर्राष्ट्रीय संबंध, यथार्थवादी ।

प्रस्तावना

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में विदेश नीति राष्ट्रों की अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति एवं अभिवृद्धि के लिए सुविचारित नीति एवं कार्य योजना होती है, जिसके माध्यम से अन्य देशों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और वै"िवक मुद्दों के प्रति अपने संबंधों का संचालन करता है। इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, कूटनीति, युद्ध शांति, संधियाँ तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार शामिल होता है। विदेश नीति में राष्ट्रीय हित स्थाई नहीं होते बल्कि समय एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। जिन्हें विदेश नीति के माध्यम से पूरा करने का प्रयास किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रों के राष्ट्रीय हित प्रधान होते हैं और इन्ही राष्ट्रीय हितों की पूर्ति का प्रयास प्रत्येक राष्ट्र शक्ति सहित सभी साधनों से करता है।

भारतीय विदेश नीति स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अपनाई गई सुविचारित नीति एवं कार्य योजना है, जिसके माध्यम से अपने अंतरर्राष्ट्रीय संबंधों को संचालन तथा राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सुरक्षा संबंधी हितों को वै"िवक मंच पर सुरक्षित रखने हेतु प्रयासरत है। भारतीय विदेश नीति नैतिक मूल्यों, अहिंसा, पंचशील, गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सहआस्तित्व, संयुक्त राष्ट्र संघ में अटूट वि"वास और वै"िवक सहयोग पर आधारित है।

भारतीय विदेश नीति के निर्माण और निर्धारण मे कई महत्वपूर्ण कारकों का योगदान है, इनमें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक स्थिति, राष्ट्रीय हित, आर्थिक आवश्यकताएं, सुरक्षा संबंधित चिंताएं, वैश्विक राजनीतिक परिस्थितियाँ तथा राष्ट्र नेताओं का व्यक्तित्व, मूल्य तथा योग्यताएँ प्रमुख हैं।

भारतीय विदेश नीति के निर्धारण एवं संचालन में निर्णयकर्ता, राष्ट्र नेताओं (प्रधानमंत्री) के मूल्य, मान्यताएं, योग्यताएं एवं व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव देखा गया है। सुरजीत मानसिंह तथा बंदोपाध्याय का मानना है कि भारत जैसे विकासशील राष्ट्र जहां विदेश नीति से सम्बंधित नीति निर्धारक संस्थाएं अपने विकसित रूप में नहीं हैं यहाँ विदेश नीति के निर्धारण में राष्ट्र नेताओं के मूल्य, मान्यताएं, योग्यताएं एवं व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव दृष्टिगत होता है। क्योंकि अधिकांश जनसंख्या विदेश नीति से सम्बन्धित मामलों को सारपूर्ण रूप से समझने की क्षमता नहीं रखती जिससे विदेश नीति से सम्बन्धित मामलें प्रधानमंत्री तथा उसके अधिनस्थों तक सीमित हो जाते हैं। अतः जनसामान्य यहाँ सत्ता के शीर्ष पर बैठे हुये नेताओं को लगभग पूजने सी लगती है। इसीकारण भारतीय विदेश नीति के निर्धारण एवं संचालन में इन राष्ट्रनेताओं (प्रधानमंत्रियों) का व्यक्तित्व तथा उससे प्रभावित नीतियाँ निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में भारतीय विदेश नीति पर पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. मनमोहन सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी आदि के मूल्य, मान्यतायें, योग्यताएँ एवं व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव दृष्टिगत होता है, जिससे भारतीय विदेश नीति समयानुकूल अपने राष्ट्रीय हितों को संवर्धित कर रही है।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रत्येक देश के वैदेशिक सम्बन्धों का प्रणयन एवं संचालन कुछ मूलभूत सिद्धान्तों एवं राष्ट्रीय हितों के आधार पर होता है। इन सम्बन्धों के निर्धारण में विभिन्न कारकों का प्रभाव होता है। जिसमें नेतृत्वकर्ता के मूल्य, मान्यताएँ, योग्यताएं एवं अनुभव तथा व्यक्तित्व की अग्रणी भूमिका रहती है।

भारतीय विदेश नीति में सम्बन्ध के उपलब्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि यहाँ विदेश नीति के मूल सिद्धान्तों में कोई विशेष परिवर्तन किये बगैर विभिन्न प्रधानमंत्रियों के समय में इसकी दिशा और दशा अलग–2 प्रकार की रही है तथा आज 21वीं सदी में वैदेशिक सम्बन्धों में उल्लेखनीय परिवर्तन आ चुके हैं। भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों में जहाँ विदेश नीति निर्धारक संस्थाएं विकसित अवस्था में नहीं है वहाँ विगत 70 वर्षों से विदेश नीति का सफल संचालन के कारकों का अध्ययन किया जाना आवश्यक हो जाता है। क्या प्रधानमंत्रियों को व्यक्तित्व भारतीय विदेश नीति निर्धारण एवं संचालन में एक महत्वपूर्ण कारक है। इस पर अध्ययन की आवश्कता प्रतीत होती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1.भारतीय विदेश नीति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाले प्रधानमंत्री के मूल्य, मान्यताओं तथा व्यक्तित्व की विवेचना करना।

2.पड़ोसी राष्ट्रों से वैदेिशक संबंधों (राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक) के विकास में भारतीय विदेश नीति के प्रभाव का विश्लेषण करना।

3.विकसित राष्ट्रों के परिपेक्ष में राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हितों की पूर्ति तथा अभिवृद्धि में भारतीय विदेश नीति के प्रभाव का विश्लेषण करना।

साहित्य की समीक्षा

1. बीड़ी दत्त इण्डियन फॉरेन पॉलिसी 1–24, ''गुटनिरपेक्षता का सिद्धांत विदेश नीति की दिशा सूचक रही है क्योंकि इससे राष्ट्रीय हितों का संवर्धन हुआ है।''
2. माइकल ब्रेचर नेहरू, ए पॉलीटिकल बायोग्राफी लन्दन 1959 पेज 564,''नेहरू वि”व के सामने अपने देश के आवाज थे विशेष दुनिया के साथ अपने देश की नीति के दार्शनिक निर्माता और यात्री थे अन्य किसी देश में कोई व्यक्ति विदेश नीति के निर्माण में इतनी प्रभावी भूमिका अदा नहीं करता जितना नेहरू भारत में करते हैं।''
3. माइकल ब्रेचर नेहरू रू ए पॉलीटिकल बायोग्राफी लन्दन, 1959 पेज 564, ''गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत का निर्माण और क्रियान्वयन यथार्थवाद में नेहरू की बहुत बड़ी देन है नेहरू जी ने वि”व को गुटनिरपेक्षता का संदेश दिया है।''
4. पंत पुष्पे”ा (2014), 21वीं शताब्दी अंतराष्ट्रीय सम्बन्ध में भारतीय चीन सम्बन्ध व वर्तमान स्थिति, पाकिस्तान भारत की विदे”ा नीति, भारत रूस सम्बन्धों का वि”लेषण तथा भारत का पड़ोसी दे”ाों के प्रति दोस्ताना व्यवहार का उल्लेख है।
5. हर्ष पंत (2016), का कहना है कि ''भारत अब वैि”वक मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसके आर्थिक और शैन्य विकास के साथ–साथ इसका राजनैतिक प्रभाव भी बढ़ा है। इसे ऐि”ाया प्र”ाान्त में संतुलनकारी शक्ति तथा पि”चम के लोकतांत्रिक सहयोगी के रूप में किया जाता है।''
6. हरीष के ठाकुर (2018) ''श्री नरेन्द्र मोदी के शासन के तहत भारत की विदे”ा नीति द”ाकों से नीतिगत गति”ाीलता में एक सूक्ष्म बदलाव से गुजरी है। जो एक नये युग का प्रतीक है।''

पंण्डित नेहरू विदेशी नीति के पथ प्रदर्शक के रूप में जाने जाते हैं जिनके आद”ािवादी मूल्य, मान्यताएँ, योग्यताएँ एवं व्यक्तित्व से भारतीय विदे”ानीति की आधारशिला स्थापित हुई थी। नेहरू जी का मानना था कि

"वि"व में शांति के द्वारा ही प्रत्येक देश का विकास हो सकता है, इसी कारण भारत स्वतंत्रता के बाद दुनिया के देशों से भाईचारे की भावना स्थापित करके सभी देशों से संबंध बनाना चाहता है।"

नेहरू जी ने अगस्त 1947 में कहा था कि "हमारी भौगोलिक परिस्थितियां एवं भारत का भौगोलिक स्थान हमें एक बड़ी शक्ति के रूप में वि"व राजनीति में अहम भूमिका निभाने के लिए बाध्य करती हैं।" नेहरू जी ने विदेश नीति के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा, "हम उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद एवं रंगभेद के नीति का सदैव विरोध करेंगे। हम संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धान्तों में पूर्ण आस्था और वि"वास व्यक्त करते हैं। इसके लिये नि"स्त्रीकरण के लिए सदैव हर स्तर पर प्रयास करते रहेंगे।"

वर्ष 1954 में भारत चीन के मध्य पंचशील समझौता नेहरू के आद"ावादी व्यक्तित्व का परिणाम था। वह वि"व में सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के आधार पर भारत को प्रगति के पथ पर ले जाना चाहते थे। किन्तु चीन द्वारा भारत पर 1962 में आक्रमण से पण्डित नेहरू के वि"व दृष्टिकोण से क्षति पहुँची।

नेहरू एशिया और अफ्रीका के स्वतंत्र राष्ट्रों की एकता के प्रबल समर्थक थे तथा एशियाई राष्ट्रों की एकता बनाए रखने के लिए 1947–1949 में एशियाई सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस प्रकार से भारतीय विदेश नीति निर्धारण एवं संचालन में नेहरू के व्यक्तित्व का विशेष प्रभाव दृष्टिगत होता है। जिसने भारतीय विदेश नीति की आदर्शवाद के आधार पर नींव रखी।

वर्ष 1966 में श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने मूल्य, मान्यताओं एवं यथार्थवादी व्यक्तित्व के कारण वि"व में लौह महिला या आयरन लेड़ी के रूप में अपनी पहचान स्थापित की। श्रीमती इंदिरा गाँधी बुनियादी नीति का पालन करते हुये विदे"ा नीति में समयानुकूल परिस्थितिजन्य तथा राष्ट्रीय हितों के अभिवृद्धि के परिप्रेक्ष्य में यथार्थवादी परिवर्तन किये।

श्रीमती गांधी का मानना था कि वि"व में कोई देश स्थाई शत्रु या मित्र नहीं है बल्कि राष्ट्रीय हित प्रधान होते हैं। अतः अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए दुनिया के देशों से राजनायिक, कूटनीतिक संबंध स्थापित करने तथा वैदे"िाक सम्बन्धों को नवीन यथार्थवादी आयाम प्रदान किया है। सुरजीत मानसिंह ने **''इंदिरा गांधी के कार्यकाल विदेश नीति में भाक्ति की खोज का युग कहा है।''**

श्रीमती गांधी ने भारतीय विदे"ा नीति के सिद्धान्तों के अनुरूप दक्षिण अफ्रीका के मुक्ति संघर्ष का समर्थन (1966–77) किया। वर्ष 1968 में भारत छण्च्ण्ज्ण् पर हस्ताक्षर नहीं किया क्योंकि यह चीन से भारत को उत्पन्न खतरों को कम नहीं कर रही थी। इंदिरा गाँधी ने व्यवहारिक असंगलग्नतावाद की नीति का अनुसरण करते हुये राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के परिप्रेक्ष्य में सोवियत संघ से वर्ष 1971 में शांति मैत्री एवं सहयोग संधि की तथा पाकिस्तान की समस्या को हल करते हुये पूर्वी पाकिस्तान को पश्चिमी पाकिस्तान से मुक्त कराया, जिससे स्वतंत्र बांग्लादेश वि"व के मानचित्र में दृष्टिगत हुआ।

इंदिरा गाँधी ने इस तथ्य को समझा कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा गुटनिर्पेक्षता के बावजूद तथी संभव है जब भारत सैन्य प्राद्यौगिकी में आत्मनिर्भता प्राप्त कर ले इसी कारण सन 1974 में पोखरण परमाणु परिक्षण

किया जिससे बदले हुये वैि"वक परिदृ"य में भारत के राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा एवं अभिवृद्धि संभव हो सके। भारत के इस कदम ने भारत को वि"व के शक्ति"ाली राष्ट्रों की पंक्ति में सम्मलित कर दिया।

अफगानिस्तान में सोवियत हस्ताक्षेप से भारत के निकट आ चुके शीत युद्ध को यथार्थवादी दृष्टकोण अपनाते हुये इंदिरा गाँधी ने सोवित संघ को भी बताया कि भारत किसी भी दे"ा में बाहरी नेता के हस्ताक्षेप को अनुचित मानता है।

इंदिरा गांधी ने वर्ष 1982 में सातवें गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन का नेतृत्व किया तथा तीन वर्ष तक अधिवेशन की अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, जिससे वि"व का भारत के प्रति सकारात्मक रवैया दिखा। इंदिरा गांधी के प्रखर, साहसी एवं लौह व्यक्तिव से भारतीय विदेश नीति में अमूलचूल परिवर्तन एवं भारत दुनिया के शक्तिशाली राष्ट्रों की अग्र पंक्ति में गिना जाने लगा।

वर्ष 1984 में इंदिरा गांधी की आसमयिक मृत्यु के बाद राजीव गांधी को भारतीय विदे"ा नीति के संचालन का उत्तर दायित्व प्राप्त हुआ। राजीव गांधी ने शीत युद्ध के जड़ता से निकलकर विज्ञान एवं प्राद्योगिकी के आधुनिकीकरण के माध्यम से भारत को 21वीं सदी में अग्र राष्ट्रों की पंक्ति में लाकर भविष्य केंद्रित विदे"ा नीति पर बल दिया। राजीव गांधी ने शांति स्थापना की दि"ाा में वि"व में परमाणु हथियारों की होड़ पर नियंत्रण स्थापित करने के लिये वि"व निः"ास्त्रीकरण की दि"ाा में भारत की ओर से संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य मंचों पर इसकी पहल की।

राजीव गांधी ने नवीन सोच के साथ अमेरिका और सोवियत संघ दोनों से संतुलित संबंध बनाया तथा गुटनिरपेक्ष आंदोलन को केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि आर्थिक और तकनीकी सहयोग का मंच बनाने की कोशिश की गई, जिससे दोनों देशों से नवीन तकनीकी आदान–प्रदान हेतु रणनीतिक कदम के रूप में देखा जा सकता है।

उन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को आधुनिक बनाने के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकी तथा संसाधनों के निवेश को सुनिश्चित करते हुए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा विज्ञान को विशेष महत्व देकर विकसित देशों के साथ तकनीकी सहयोग को बढ़ावा दिया ।

राजीव गांधी ने संघर्ष नहीं, संवाद की नीति का समर्थन करते हुए पड़ोसी देशों के साथ संबंध सुधारने का निरंतर प्रयास किया। उन्होंने जातीय संघर्ष का निवारण करते हुए वर्ष 1987 में भारत और श्रीलंका के बीच समझौता तथा वर्ष 1988 में उनके ऐतिहासिक यात्रा के माध्यम से वर्षों बाद संवाद बहाल हुआ एवं परमाणु प्रतिष्ठानों पर हमला न करने का समझौता भी किया गया।

उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय वि"व में आए परिवर्तनों तथा नए गुटों से उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने हेतु भारत की रक्षा क्षमताओं को बनाए रखते हुए वर्ष 1988 में परमाणु निशस्त्रीकरण की पहल कर संयुक्त राष्ट्र महासभा में परमाणु शस्त्रों के निर्माण पर रोक एवं परमाणु शस्त्रों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए समझौता किए जाने सम्बन्धी प्रस्ताव रखे।

उन्होंने दक्षिण–दक्षिण सहयोग को प्रोत्साहन दिया तथा एशिया, अफ्रीका और लैट्रिन अमेरिका के देशों के साथ मजबूत संबंधों का निर्माण किया। उपनिवेशवाद और नस्लभेद के खिलाफ, जून 1986 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ प्रतिबंधों को लेकर पेरिस में आयोजित वि"व सम्मेलन में भारत ने नस्लवाद और रंगभेद की नीति को तत्काल समाप्त करने के लिए वि"व जनमत तैयार किया।

वर्ष 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने विदेश नीति निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने कार्यकाल में साहसी व्यक्तित्व तथा सहिष्णुता का परिचय देते हुए भारतीय विदेश नीति को नवीन आयाम प्रदान किए।

सन् 1998 में वाजपेई सरकार द्वारा भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, रणनीतिक स्वायत्तता दृष्टिगत रखते हुये पोखरण में परमाणु परीक्षण किया गया। भारत के इस कदम से अमेरिका सहित विभिन्न राष्ट्रों जैसे–अमेरिका, जापान, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया इत्यादि दे"ाों ने भारत पर आर्थिक तथा तकनीकी सहयोग पर प्रतिबन्ध लगाये किन्तु इसके बावजूद भारत ने स्वयं को एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित किया।

पड़ोसी राष्ट्रों से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध के रूप में उन्होंने फरवरी 1999 में दिल्ली–लाहौर बस सेवा द्वारा संबंध बनाने का प्रयास किया किन्तु पाकिस्तान ने जुलाई 1999 में कारगिल युद्ध प्रारंभ कर दिया।

वर्ष 2001 में अटल बिहारी वाजपेई और पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के मध्य आगरा में शिखर वार्ता हुई। जिसमें दोनों देशों के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध बनाने का प्रयास किया गया। किन्तु दिसंबर 2001 को भारत की संसद भवन परिसर में हुए आतंकवादी हमले के कारण भारत और पाकिस्तान के संबंध में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई।

वर्ष 2004 में 14वीं लोकसभा तथा वर्ष 2009 में 15वीं लोकसभा में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में सरकार बनी। इस काल में विदे"ा नीति की प्राथकिता, आर्थिक विकास को बढ़ावा, वै"वक एकीकरण और बहुध्रुवीय वि"व में भारत की भूमिका को मजबूत करते हुये जिसने पि"चम की ओर देखो की नीति, आि"ायान के साथ मजबूत सम्बन्ध और ब्रिक्स जैसे नयें मंचों का गठन इत्यादि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्ष 2005 में नागरिक परमाणु ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति की दिशा में अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करते हुए, डॉ0 मनमोहन सिंह ने अमेरिका से सिविल परमाणु ऊर्जा समझौता किया। यह समझौता अमेरिका के ।जवउपब म्दमतहल ।बज की धारा 123 के अंतर्गत किया गया। इसके तहत भारत को नागरिक परमाणु तकनीक, ईंधन और रिएक्टर प्राप्त करने की अनुमति प्रदान की गई तथा भारत अपने परमाणु कार्यक्रम को नागरिक और सैन्य क्षेत्रों में विकसित कर सकेगा। इसके द्वारा वर्ष 1974 के बाद से लगे परमाणु प्रबंध समाप्त करके ऊर्जा सुरक्षा को मजबूती प्रदान की गई एवं भारत को जिम्मेदार परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई।

डॉ. मनमोहन सिंह ने लुक ईस्ट पॉलिसी का विस्तार करके दक्षिण पूर्व एशिया और आसियान देशों के साथ व्यापार और सामाजिक रिश्ते गहरे किए। उन्होंने जापान, वियतनाम, दक्षिण कोरिया, चीन, न्यूज़ीलैंड, ठप्डैज्म्ब् इत्यादि देशों के साथ रक्षा और आर्थिक सहयोग बढ़ाया गया।

मनमोहन सिंह के आर्थिक विकास और निवेश आकर्षित करते हुये विदेशी पूंजी, तकनीकी सहयोग और ऊर्जा सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। भारत ने ळ20 के आर्थिक संकट से निपटने के लिए एक प्रमुख मंच बनाया और बहुपक्षीय मंच गठन करके छमू क्मअमसवचउमदज ठंदा की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्ष 2014 में श्री नरेंद्र मोदी एक करि"माई प्रधामंत्री के रूप में नेतृत्व करते हुये दिखाई दिये। श्रीमती इंदिरा गांधी के काल में जिस प्रकार से ''इंडिया इज इंदिरा'' तथा ''इंडिया इज इंदिरा'' का वि"ोषण दिया जाता था। आज हर–हर मोदी घर–घर मोदी के रूप में उनकी लोकप्रिय व्यक्तित्व भारतीय विदेश नीति का पूरक बन चुका है।

श्री नरेंद्र मोदी ने सन 2014 में अपने शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों को छमपहीइवनतीववक पितेज चवसपबम का संदे"ा देकर भारतीय विदेश नीति को गति प्रदान की। मोदी जी ने यात्रा कूटनीति द्वारा लगभग 138 से अधिक देशों में कूटनीतिक संबंधों को मजबूत किया है।

कोविड–19 महामारी के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की वैक्सीन कूटनीति को वै"वक सहयोग का माध्यम बनाकर लगभग 99 देशों को कोविड–19 वैक्सीन का सहयोग देकर वैदे"िाक संबंधों को मजबूत किया है।

28 सितंबर सन 2014 को न्यूयॉर्क में न्णछण्ब् की महासभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने यू. एन.ओ के स्वरूप मे बदलाव लाने की अपील की है।

वर्ष 2016 को मोदी जी ने यू.एस.ए. की कांग्रेस के संयुक्त बैठक को संबोधित किया और उनके व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण ही एम.टी.सी.आर के ग्रुप के सदस्य के रूप में भारत को शामिल करने के लिए सहमत हो गए।

पंण्डित नेहरू विदेशी नीति के पथ प्रदर्शक के रूप में जाने जाते हैं जिनके आद"ावादी मूल्य, मान्यताएँ, योग्यताएँ एवं व्यक्तित्व से भारतीय विदे"ानीति की आधारशिला स्थापित हुई थी। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने मूल्य, मान्यताओं एवं यथार्थवादी व्यक्तित्व के कारण वि"व में लौह महिला या आयरन लेड़ी के रूप में अपनी पहचान स्थापित की। श्रीमती इंदिरा गाँधी बुनियादी नीति का पालन करते हुये विदे"ा नीति में समयानुकूल परिस्थितिजन्य तथा राष्ट्रीय हितों के अभिवृद्धि के परिप्रेक्ष्य में यथार्थवादी परिवर्तन किये।

आज मोदी जी की व्यवहारिक (च्तंहउंजपब) विदेश नीति द्वारा ''वसुधैव कुटुम्बकम'' जैसे सिद्धांतों के साथ राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि रखते हुए वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत व्यवहारिक गुटनिरपेक्षता को अपनाकर कई वैश्विक मंचों पर सक्रिय है तथा ठत्प्ब्ए और ̄ब्व मंचों के माध्यम से चीन और रूस देशों के साथ जुड़ाव, खाड़ी देशों के साथ निवेश संधियाँ, तथा पश्चिमी देशों, अमेरिका, जर्मनी, जापान के साथ तकनीकी और रणनीतिक साझेदारी को गहरा तथा हिन्द महासागर में सुरक्षा एवं विकास का नेतृत्व कर रहा है।

आज भारतीय विदेश नीति का प्रमुख लक्ष्य आर्थिक एवं डिजिटल कूटनीति के माध्यम से भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है, जिसके लिए निर्यात और विदेशी निवेश पर जोर तथा आत्मनिर्भरता, रक्षा उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखलाओं में आत्मनिर्भरता को रणनीतिक हथियार के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

आज भारत स्वयं को विकासशील देशों के प्रतिनिधित्व के रूप में स्थापित कर रहा है ताकि अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों (न्छण्व्ए ̄ण्ज्व्ए ण्डण्थ्) में सुधार करके उन्हें अधिक लोकतांत्रिक बनाया जा सके।

आज भारत की विदेश नीति विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम् बृहद वैश्विक परिवार के रूप में देखता है जो साझा एवं शान्तिपूर्ण वैश्विक विकास में विश्वास रखते हैं भारत की इस व्यवहारिक विदेश नीति में मोदी जी के व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रभाव है।

. सन्दर्भ सूची

ब्रेचर माइकेल, नेहरू : ए पॉलिटिकल बायोग्राफी लंदन, 1959।

नेहरू जवाहर लाल, इंडियन फॉरेन पॉलिसी स्लेक्टेड स्पीचिज, सितम्बर 1946 ये अप्रैल 1961, नई दिल्ली, 1961।

ब्रेचर माइकेल, स्पेसिफिक सोरस ऑफ इंदिया न्युट्रलिज्म, के.पी. मिश्रा (सम्पादक) फॉरेन पॉलिसी ऑफ इंडिया नई दिल्ली, 1977।

बंधोपाध्याय जयन्तनुता, भारतीय विदेश नीति का निर्माण, नई दिल्ली 1979।

सुरजीत मानसिंह, इंडियाज सर्च फार पावर, इंदिरा गांधी फॉरेन पॉलिसी, 1966–1982, नई दिल्ली 1984।

खन्ना, बी0 एन0 लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदेश नीति, विकास दिल्ली 2004।

पंत, पुष्पेश : भारत की विदेश नीति, टाटा मेग्रा हिल, नई दिल्ली, 2010।

दत्त, वी0 पी0 : स्वतंत्र भारत की विदेश नीति, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, नेहरू भवन, नई दिल्ली, 2011

पंत पुष्पे"ा, 21वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, टाटा मैंकग्राहिल एजुके"ान प्राइवेट लि0 नई दिल्ली 2012 ।

पंत, पुष्पे"ा : 21वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, टाटा मेग्रा हिल, नई दिल्ली, 2014

खन्ना, वी0,एन0 : अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विकास, प्रा0 लि0, नोएडा, नई दिल्ली, 2014

डॉ0 पंत, पुष्पे"ा व श्रीपाल जैन, अंर्तराष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त एवं व्यवहार, मिनाक्षी प्रका"ान मेरठ, 2015 ।

वैदिक, डॉ0 वेदप्रताप : मोदी की विदे"ा नीति वैदिक की नजर में, डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, संस्करण 2017